

दीनदयाल उपाध्याय: एक दिग्दर्शन

भारत को राष्ट्र मानने का सांस्कृतिक बोध भारत भूमि को 'भारत' मानने में मिलित है। यदि भारत में देते हैं तो क्या हुआ भारत राष्ट्र नहीं रह जाता है- यह एक भूगोल मात्र के रूप में क्या रह जाता।

पश्चिमी विचारधारा के पूंजीवादी और समाजवादी बहनों के बीच फँसे आजाद भारत के नेतृत्व में नवोदित प्रारम्भ को उत्तम भारत की रीति-नीति, परंपरा, प्रकृति और परिप्रेक्ष्य का कोई ध्यान नहीं रखते। आधुनिक विप्लव, अराजकता, हिंसा, अराज्य और पर्यावरण प्रदूषण जैसे विस्मयों से भरे। आज के भारत को विचार मंचल को न तो छोड़ने बन पा रहा है और ना ही दोते। इन्हीं विस्मयों के समाधान हेतु दिग्दर्शन उपाध्याय जी 'एकदम मानव दर्शन' की राह बताते हैं। भारतीय परंपरा में इन व्याख्यायित करने का उद्देश्य है कि भारतीय धर्म और समाज के एकदम होने का बोध कराती है। विस्मय मार्ग यह है कि व्यक्ति और समाज को बाँध सकता है। इसी कारण राष्ट्र के लिए नीतियाँ बनाने वालों को दिशा दिखाने हुए वे कहते हैं कि उनका उद्देश्य है राष्ट्र को परमानन्द, उसके बाद उसकी समाज व्यवस्था, राज्य व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, विज्ञान व्यवस्था को, उस पर विचार कर, अस्तित्वान कर उसी के लिए उसी के अनुरूप नीतियाँ बनाने से ही भारत को विश्वविद्यालय के मानने एक आदर्श बन सकता है...

डा. संजय कुमार ने दिल्ली विश्वविद्यालय के वीर अध्येतृ विभाग से स्नातकोत्तर, एम. फिल. और डि. एड. की उपाधि प्राप्त की। साथ ही आपकी पी. एच. डी. बोध हेतु भारतीय इतिहास अस्तित्वान संस्कृत विद्यापीठ, प्रान्त हुआ, आपने शोध-कार्य हेतु पाकिस्तान (नवलिवा), श्री लंका (अनुराधपुर), बर्मादेश (पट्टकोट) तथा नेपाल की जिज्ञासा बहुत ही मार्मिक अनुभव रहा। आप 'विज्ञानमिथ्या महाविचार एक अध्येतृ' (हिन्दी) एवं 'Buddhism in India' (अंग्रेजी) नामक पुस्तिकाएँ इन विषयों (अंग्रेजी) जैसे पुस्तकों को लेखक हैं।

आप बुद्धिमान, संस्कृति, राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर जैसे विषयों एवं दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों आयोजित करवा चुके हैं।

संपादित: दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बंधित देवबंदू महाविद्यालय में प्राध्यापक।



दीनदयाल उपाध्याय

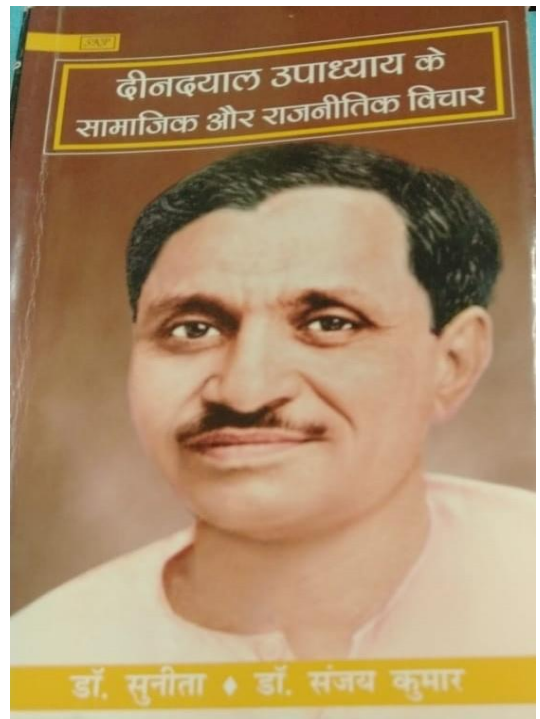
एक दिग्दर्शन

डा. संजय कुमार

₹ 350

SHREE KA LA PRAKASHAN
42/43, U.B. Jawahar Nagar, Delhi - 110001
Mobile: 09868462459
E-mail: skp.12345691@gmail.com

ISBN-978-93-85329-53-1



ISBN-978-93-85329-53-1

